Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत के पुनरुत्थान के लिए पर्यावरण संरक्षण पर भारतीय दृष्टीकोण एवं उसका समग्र अध्ययन

गरीमा राठौर* महेन्द्र पटेल**

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय विधि महाविद्यालय, अशोकनगर (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, शासकीय विधि महाविद्यालय, बीना (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत के पुनरुत्थान के लिए पर्यावरण संरक्षण एक महत्त्वपूर्ण विषय है। जो कि मानव जाति के विकास के साथ ही देश यानि भारत का विकास सुनिश्चित है और मानव जाति के लिए उनके पद–पद पर विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण एक आवश्यक प्रक्रिया है जो कि स्वस्थ मन के साथ स्वस्थ मनुष्य को जन्म देती है जिससे व्यक्ति बेहतर तरीके से भारत के पुनरुत्थान में योगदान देगा। जल, जीव, जन्तु, मनुष्य एवं वनस्पति यह सब पर्यावरण का एक भाग है। यदि हम एक विकसित भारत की कल्पना करते हैं, तो हमारे लिए मानव जाति के विकास के लिए पर्यावरण का संरक्षण भी एक महत्तवपूर्ण विषय है। पर्यावरण संरक्षण पुराने काल में कुछ ऐसी परंपराओं के साथ किया जाता था, कि उसका केन्द्र बिन्दु मनुष्य एवं उसके साथ जीव–जन्तु और वनस्पति की रक्षा करना होता था। इसलिए हमें एक होकर मानव जाति के लिए और भारत वर्ष के लिए पर्यावरण संरक्षण को आगे लाना होगा, इसी से ही भारत का पुनरुत्थान निश्चित होगा।

शब्द कुंजी –पर्यावरण, नियम, संरक्षण, वातावरण, व्यक्ति, परंपराऐं, प्राचीन, भारतीय, पुनरुत्थान, दृष्टिकोण, जीवन।

पर्यावरण संरक्षण – पर्यावरण के शब्द में यह ध्वनित होता है कि'परि' एवं 'आवरण' से मिलकर 'पर्यावरण' शब्द का जन्म हुआ। 'परि' अर्थात् चारों ओर एवं आवरण यानि घेरा। मतलब पर्यावरण प्रकृति की ऐसी संरचना है, जो कि हमारे चारों तरफ एक आवरण की तरह है। इसके अन्तर्गत जैविक और अजैविक यानि मृदा, जल, वायु तथा रसायन, पौधे, पशु तथा सूक्ष्म जीवाणु आते है और इन्ही सभी चीजों के संरक्षण को जो स्थलमण्डल, वायुमण्डल एवं जलमण्डल से मिलकर बना है, इसी को पर्यावरण संरक्षण कहा जाता है। इसी के अन्तर्गत विधिक पर्यावरण की बात की जाए, तो विधिक पर्यावरण का आशय उन कानूनों, नियमों, विनियमों और नीतियों से है जो कि किसी देश, राज्य या समाज में व्यवसायिक गतिविधियों, व्यक्तिगत व्यवहार और सामाजिक संबंधों को नियंत्रित करता है।

पर्यावरण संरक्षण मे भारतीय दृष्टिकोण – पर्यावरण संरक्षण में भारतीय दृष्टिकोण एक अलग ही महत्व प्रदान करता है हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत भारतीय दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यधिक आवश्यक है भारतीय परंपरा के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण जैविक और अजैविक एक संरक्षण है जो कि हमारे आसपास रहता है इसके अंतर्गत हमें अपने आसपास की चीजों को संरक्षण प्रदान करना होता है भारतीय संस्कृति के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण का अपना ही महत्व है प्राचीन काल से ही व्यक्तियों के बीच इस विचारधारा को विकसित किया गया है कि पर्यावरण संरक्षण एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है भारतीय दृष्टिकोण को अगर देखा जाए तो पर्यावरण संरक्षण में भारत ने हमेशा ही भाग लिया है उसने कई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण जैसे गंभीर मुद्दों पर अपनी सहभागी व्यक्त की है और उसे भारतीय स्तर पर लाने का पुरजोर प्रयास किया है भारतीय दृष्टिकोण की अगर बात की जाए तो हमेशा ही भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए एक आध्यात्मिक अभिवृद्धि को बढ़ावा दिया है उसने इसे संस्कृत से भी जोड़ा है आदिवासी लोगों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के कई उपायों को उसने शहर में भी लागू करने की प्रक्रिया की है सबसे ज्यादा पर्यावरण संरक्षण जंगलों में अनुसूचित जनजातियों के द्वारा किया जाता है क्योंकि उनका यह मानना होता है कि उनकी देखभाल करने वाला अगर कोई है तो यह पर्यावरण है जहां पर वह जीवित रहते हैं और इसी पर्यावरण के द्वारा ही वह अपनी दिनचर्या को पूरा करते हैं। इसीलिए भारतीय दृष्टिकोण में वनों और जंगलों में रह रहे व्यक्तियों के खान–पान और उनके रहने के तरीके और उनके पर्यावरण संरक्षण के तरीके, इलाज करने के तरीके पर शोध किया जा रहा है, कि किस प्रकार हम पर्यावरण को बचा सकते हैं, क्योंकि अगर हम जागरूक नहीं हुये, तो एक दिन हमारी पृथ्वी खतरे में आ जाएगी और पर्यावरण प्रदूषित होने के कारण व्यक्ति नकारात्मकता से ग्रसित हो जाएगा। पर्यावरण संरक्षण के द्वारा भारतीय दृष्टिकोण के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों का समुचित प्रबंध किया गया है। पर्यावरणीय विकास के लिए शिक्षा को जागरूकता को बढ़ावा दिया गया है। प्राकृतिक संसाधनों को सिर्फ उत्पादकता के लिए नहीं बल्कि उनकी देखभाल और उनका संरक्षण उनकी महत्वता पर जोर दिया जाने लगा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए जल, जंगल, जमीन इन तीनों ही चीजों पर बहुत ही ध्यान दिया जाने लगा है। हर साल राज्यों के द्वारा 'पेड़ लगाओ और उनकी देखभाल करो' जैसी चीज भी आने लगी हैं। अंकुरण के माध्यम से पेड़ों को लगाना और इसकी मॉनिटरिंग करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य माना जाने लगा है। जैसे कि बिजली बचाना क्योंकि बिजली जो होती है वह पानी या फिर खदानों के प्रयोग से बनती है, जिससे कि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन होता है। इसको बचाना हमारा नैतिक कर्तव्य है। प्लास्टिक को यूज न करना, इससे बचना यह भी

हमारा एक नैतिक कर्तव्य माना गया है, पर्यावरण संरक्षण के लिए। जैसा कि आप जानते हैं कि स्वच्छता अभियान के अंतर्गत राज्यों में जो कोशिश की जा रही है यह भी पर्यावरण संरक्षण का ही भाग है जैसे कि हर समाज में राज्य में अगर हम अपने स्तर पर पर्यावरण को सुरक्षित और स्वच्छ रखते हैं तो पर्यावरण भी हमारा धीरे-धीरे संरक्षित होने लगता है।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर हमारा भारतीय दृष्टिकोण बहुत ही सकारात्मक के साथ कार्य कर रहा है। वह घर-घर जाकर व्यक्तियों को जागरुक कर रहा है, कि किस प्रकार उन्हें पर्यावरण के प्रति चिंतित होना चाहिए। क्योंकि यह वही पर्यावरण है जहां पर आप रहते हैं और श्वांवस लेते हैं। अगर आप अच्छे वातावरण में सांस नहीं लेंगे तो कैसे जिएंगे। पर्यावरण को लेकर पर्यावरण दिवस के दिन कई कार्यक्रम निबंध प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक जैसे आयोजन राज्य के द्वारा करवाए जाते हैं। जिससे कि व्यक्तियों के अंदर जागरूकता उत्पन्न हो सके। इसी प्रक्रिया के अंतर्गत राज्य के द्वारा अंकुर प्रोजेक्ट चलाया गया जिसके अंदर हर व्यक्ति को कुछ पेड़ लगाकर उसकी फोटो को अपलोड करना होता है और इसकी मॉनीटरिंग के लिए उसे हर 2 महीने में फोटो डालकर दिखाना होता है कि वह पौधा कितना बड़ा हो गया है। भारत के पुनरुत्थान के लिए जरूरी है कि हम पर्यावरण संरक्षण को भी महत्व दें। क्योंकि भारत का विकास वहां पर रहने वाली जनता पर निर्भर करता है और यह विकास भी उन्हीं के लिए किया जा रहा है। अगर वह स्वस्थ रहेगें और पर्यावरण भी स्वस्थ रहेगा तो भारत का पुनरुत्थान निश्चित है।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यरकता क्यों है?

5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। आज के युग में पर्यावरण प्रदूषण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बढ़ती जनसंख्या एवं इमारतों के कारण पर्यावरण की प्रकृति नष्ट हो रही है, हर जगह घने वृक्ष काटे जा रहे हैं और बिल्डिंगों का निर्माण किया जा रहा है और यह सब पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ है।

आज विश्व भर में पर्यावरण सेवा संसाधनों के विनाश की समस्याएं बढ़ रही हैं। जिसकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति पारिस्थितिकी संकटों के रूप में आ रही है। प्राकृतिक अवस्था में परिस्थितिकीय संतुलन अपने आप बना रहता है। लेकिन पिछले कई दशकों में मानव के हस्तक्षेप के कारण कई चीजे होना शुरू हुई है। जिनमें भूकंप आना, बाढ़ आना, मरुस्थलीकरण, जैव विविधताओं को संकट, जीव के विनाश आदि समस्याएं उत्पन्न होने लगी है। परिणाम स्वरुप संतुलन के समय गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं और प्राणी तंत्र और मनुष्य के साथ होने वाले पर्यावरण के इस व्यवहार को हम इस प्रकार छोड़ नहीं सकते। इसी प्रयास में मार्च 2022 में भारत के केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने भारत की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट 2022 जारी की। यह रिपोर्ट जलवायु परिवर्तन, प्रवासन, स्वास्थ्य एवं खाद्य प्रणालियों पर केंद्रित थी। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट और डाउन टू अर्थ पत्रिका का एक वार्षिक प्रकाशन है। जिसमें जैव विविधता, वन, वन्य जीव, ऊर्जा उद्योग, आवास प्रदूषण अपशिष्ट, कृषि एवं ग्रामीण विकास भी शामिल है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट नई दिल्ली स्थित एक गैर लाभकारी सार्वजनिक हित संस्था है। जिसकी स्थापना 1980 में की गई थी। यह संगठन भारत में पर्यावरण खराब नियोजन जलवायु परिवर्तन और पहले से मौजूद नीतियों के बेहतर क्रियान्वन आदि से संबंधित मुद्दों को उठाता है।

वहीं अगर बात करते हैं कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता क्यों पड़ी तो इसके बहुत सारे कारण थे। जैसा कि हम जानते हैं कि ग्लेशियर पिघल के समुद्र के पानी के स्तर को बढ़ा रही है, जो कि बाद में बाढ़ का भी काम कर रहा है। और ज्वार भाटा जो कि पहले से काफी ज्यादा बढ़ गया है, यह भी पर्यावरण संरक्षण न होने का एक बहुत बड़ा कारण है।

पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस के प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, ब्लैक हॉल इफेक्ट आदि को कम या कंट्रोल करने के लिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है। वन क्षेत्र का कम होना एक बहुत बड़ा कारण है कि पेड़ लगातार काटे जा रहे हैं। जिससे कि पर्यावरण संरक्षण में दिक्कतें पैदा हो रही है और पर्यावरण में बहुत सारी प्रजातियां लुप्त हो रही है।

नदियों का जल लगातार प्रदूषित हो रहा है जिसका पर्यावरण संरक्षण करना बहुत ही आवश्यक है। पर नदियों में ज्यादातर गंदी नालियों का पानी मिलाया जा रहा है और पानी दूषित और विषैला होने लगा है।

ग्लोबल वार्मिंग लगातार बढ़ रहा है इसलिए पर्यावरण संरक्षण बहुत ही आवश्यक है। कितने पेड़ हम लगाएंगे जिससे की ठंडक पैदा होगी दिन पर दिन पृथ्वी का टेंपरेचर हर 5-10 सालों में दो डिग्री बढ़ता जा रहा है जो कि ग्लोबल वार्मिंग जैसी खतरनाक चीजों को जन्म दे रहा है।

मेथेन गैसों के साथ-साथ क्लोरोफ्लोरोकार्बन की भारी उपस्थिति ने ओजोन परत को बड़े पैमाने पर नष्ट कर दिया है। घर पर कई क्षेत्रों में अम्ल वर्षा, त्वचा कैंसर हुआ है इसलिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

पर्यावरण संरक्षण के तरीके - आज के युग में अगर बात की जाए तो सरकार के प्रयास सराहनीय है। पर सरकार के प्रयास तभी पूरे हो पाएंगे जब व्यक्ति पर्यावरण के लिए अपनी उपस्थिति को प्रासंगिक बनाएगा। अगर आदमी अपनी तरफ से कोई प्रयास न करें तब पर्यावरण का संरक्षण करना सरकार के लिए भी असंभव हो जाएगा। जरूरत है कि हर आम आदमी अपनी जिम्मेदारियां को समझे, वह समझे कि पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए वह कौन से छोटे-छोटे उपाय कर सकता है। हर पुरुष, स्त्री, बच्चों को अपनी-अपनी तरफ से पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए और एक दूसरे को पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझ कर जन आंदोलन के रूप में जन भागीदारी को बताना चाहिए। आज का युग वैज्ञानिक युग है। नई-नई खोज और अविष्कार लगातार किये जा रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण का उपयोग करने के लिए उसे टीवी, रेडियो, समाचार पत्रों, यूट्यूब चौनल जहां भी उसे लगे पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता को बढ़ाना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के तरीको की अगर बात की जाए, तो व्यक्ति को अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के तरीके और मुख्य विधियों को समझते हैं। जिनसे की पर्यावरण संरक्षण को सरल बनाया जा सकता है। जैसे की प्रथम प्रयास हमें फॉरेस्ट कन्वर्सेशन का करना चाहिए, क्योंकि पेड़-पौधे, हवा, भोजन के साथ-साथ हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले दैनिक उत्पाद शामिल है, जो की वन से हमें प्राप्त होते हैं या फिर वन्य जीवों से हमें प्राप्त होते हैं। ऐसे में हमें चाहिए कि पेड़ों की कटाई को रोका जाए और अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं, जिससे कि पारिस्थितिक संतुलन भी बनाया जा सके और व्यक्ति को इन्हीं सब चीजों की पूर्ति की जा सके। दूसरा तरीका बहुत ही अच्छा है जिसके अंतर्गत हम पानी के उपयोग को संभाल कर कर सकते हैं। क्योंकि हमने देखा है कि व्यक्ति ज्यादातर पानी का उपयोग गलत तरीके से करते है। अगर तीसरे तरीके की बात की जाए तो वेस्ट मैनेजमेंट और रीसाइकलिंग प्रोसेस को हमें अपनाना चाहिए, जिससे कि प्रदूषण कम

फैले और चीजों का उपयोग दोबारा किया जा सके इसी प्रयास में सूती बैग का प्रयोग अगर हम करते हैं और प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाते हैं तो प्लास्टिक के द्वारा हो रहे वायु प्रदूषण, स्थल प्रदूषण को रोका जा सकता है। और जानवरों को भी सुरक्षित रखा जा सकता है। चौथे स्तर पर अगर बात की जाए तो सॉइल कन्वर्सेशन यानी मृदा संरक्षण यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके द्वारा हम मिट्टी के कटाव को रोक सकते हैं और पृथ्वी पर हो रहे मृदा के दोहन को रोका जा सकता है। पांचवें स्तर पर बात की जाए तो हम वाटर कन्वर्सेशन यानी जल संरक्षण की बात कर रहे हैं। जल संरक्षण हमारे लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि आज दुनिया में कई देश ऐसे हैं, जहां पर जल पूर्ण रूप से खत्म हो चुका है। और भारत भी अवस्था में आने में कुछ ही दूरी पर है, क्योंकि यहां पर बहुत सारी प्राकृतिक नदियां हैं और बरसाती नदियां हैं। उसके बाद भी पानी का कन्वर्सेशन या संरक्षण पूर्ण रूप से नहीं हो पा रहा है।

अगले पर्यावरण संरक्षण की बात करें तो वाइल्डलाइफ प्रोटक्शन यह बहुत ही जरूरी है। इसके द्वारा हम उन प्रजातियों को विलुप्त होने से रोक सकते हैं, जो कि आज खतरे के निशान पर है। इसके लिए पेड़ों की कटाई को रोकना, वहां पर पानी की पूर्ति होना, वहां पर हाईवे का न निकलना, यह सब चीज वाइल्डलाइफ रिजर्व को सुरक्षित रखती हैं।

डाइवर्सिटी संरक्षण यानी जैव विविधता संरक्षण, पर्यावरण के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं जरूरी प्रक्रिया है। इसके द्वारा हमारी जैव विविधता को बचाया जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण में समस्याऐं – पर्यावरण संरक्षण में बहुत सारी समस्याओं को जन्म दिया है। इन समस्याओं में वायु प्रदूषण, जलप्रदूषण, भूमि प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, प्राकृतिक आपदाएं, संसाधनों की कमी, कचरे का प्रबंध, भूजल स्तर गिरना और मिट्टी का क्षरण शामिल है। इसके अलावा जंगलों की कटाई और वनों का उपयोग काफी मात्रा में किया जा रहा है। जिससे मनुष्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जल संकट जैसी समस्याएं बढ़ती ही जा रही है। जिससे कि मनुष्य को कई राज्य में पानी उपलब्ध नहीं है, जिसमें राजस्थान इसमें पहले नंबर पर आता है। वहीं पर अगर गुजरात और दिल्ली की बात की जाए तो वहां पर वायु प्रदूषण, कंपनियां होने के कारण चरम सीमा पर है। सही बात तो यह है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए मानव स्तर पर कार्य बहुत ही निम्न किया जा रहे हैं। जिससे कि पर्यावरण संरक्षण एक सही दिशा में कार्य नहीं कर पा रहा है। अगर हमें पर्यावरण संरक्षण को करना है, तो मनुष्य को एक सही दिशा में कार्य करना होगा और उसे आगे आकर और भी लोगों को प्रेरित करना होगा। समस्याओं का जन्म मनुष्यों के द्वारा ही होता है और आज जो समस्या, पर्यावरण संरक्षण को लेकर आ रही हैं, उसमें भी कहीं ना कहीं मनुष्य ही जिम्मेदार है। हमें चाहिए कि मनुष्य शिक्षा के साथ-साथ जागरूक भी बने। शिक्षा के महत्व को समझें और अपने दैनिक दिनचर्या में पर्यावरण के प्रति अपनी कर्तव्यों को पूर्ण करें। आज का प्राणी बहुत ही व्यस्त प्राणी है। वह हर उस चीज का उपयोग कर रहा है, जो कि उसके जीवन को सही दिशा की वजह गलत दिशा की ओर ले जा रही है। आज भी कुछ गांव कुछ राज्य ऐसे हैं, जहां पर मनुष्य, जागरूकता को खुद ही बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन वही कुछ राज्य और गांव ऐसे भी हैं, जहां पर प्रदूषण और पर्यावरण का अत्यधिक दोहन हुआ है। हमें चाहिए कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित रखने के लिए आज से ही पर्यावरण के प्रति जागरूक हो जाए और अपने आने वाले बच्चों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाएं। पर्यावरण संरक्षण में अगर सबसे बड़ी समस्या है, तो वह जनसंख्या समस्या है। प्राचीन काल में जनसंख्या कम होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के पास भूखंड अत्यधिक हुआ करते थे। जिसके कारण वह कुएं, तालाब, पेड़-पौधे काफी मात्रा में लगाता था और उसका उपयोग भी करता था। अब जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है, प्राकृतिक संसाधन की कमी होती जा रही है और उनका दोहन अत्यधिक हो रहा है। जिसकी वजह से अब पहले जैसे तालाब कुएं का निर्माण नहीं किया जा रहा है। जिससे कि वाटर कन्वर्सेशन में भी कमी आने लगी है और मृदा का संरक्षण भी नहीं हो पा रहा है। हमारी वायु प्रदूषण होने लगी है, हमारा जल भी प्रदूषित होने लगा है और पर्यावरण संरक्षण के नाम पर सिर्फ बातें की जा रही है। लेकिन उसे सकारात्मक रूप नहीं दिया जा रहा है।

निष्कर्ष – जब भी हम पर्यावरण संरक्षण की बात करते हैं तो सकारात्मकता के साथ नकारात्मकता भी आती है, क्योंकि पर्यावरण संरक्षण दोनों को एक साथ लेके चलता है। अगर हम सकारात्मकता की बात करें, तो हर व्यक्ति जो कि पर्यावरण में अपना समय दे रहा है और पर्यावरण में सुधार कर रहा है, साथ में लोगों को जागरूक बना रहा है। ये एक सकारात्मकता है जो कि भारतीय दृष्टिकोण में पाई जाती है। वहीं इसका दूसरा पहलू जो कि नकारात्मक है व्यक्ति पानी को गन्दा कर रहा है, वायु प्रदूषण फैला रहा है, ध्वनि प्रदूषण फैला रहा है, जंगलों को काट रहा है, जिससे पर्यावरण संरक्षण जैसी गंभीर समस्याएं पैदा हो रही है। यह एक नकारात्मकता का उदाहरण है। भारतीय दृष्टिकोण में पर्यावरण संरक्षण का महत्व सर्वाधिक है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक पर्यावरण संरक्षण के लिए कई सारे प्रयास किए गए। आज भी मनुष्य पर्यावरण से जुड़कर कई प्रकार के एनजीओ के साथ मनुष्यों को जाग्रत कर रहा है। हमारे भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए स्कूल के साथ-साथ कॉलेजों में भी शिक्षाओं का प्रारम्भ किया जा चुका है। भारतीय युवा अब जागृत हो चुका है और आगे बढ़कर पर्यावरण संरक्षण में भाग ले रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए आज कानूनों का विकास किया जा चुका है। पर्यावरण संरक्षण में हर प्रकार के कानून बनाए जा चुके हैं, जिसके द्वारा हर प्रकार से पर्यावरण के लिए दोहन को रोका जा सके। चाहे भूमि की बात हो या फिर वायु, जल, ध्वनि और अन्य प्रकार के प्रदूषणों की। राज्य सरकार सभी को रोकने के लिए कड़े उपबंध बना रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी (परीक्षा मंथन : अनिल अग्रवाल)
2. पर्यावरणीय विधि (चुनौतियाँ, विश्लेषण और भविष्य : अनूप कुमार और प्रो. बी.सी. निर्मल)
3. पर्यावरण एवं पर्यावरण संरक्षण विधि की रूपरेखा (डॉ. अनिरूद्ध प्रसाद)
4. पर्यावरण अध्यपयन (मोतीलाल बनारसीदास)
5. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी (माजिद हुसैन)
6. इंटरनेट
7. न्यूनजपेपर लेख जनसत्ता (पर्यावरण की खातिर)
8. पर्यावरण : भारत सरकार (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली : लेखक आर. के. गुप्ता, ऋचा शर्मा)
9. ENN : Environment News Network
10. पर्यावरण पत्रिका : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की हिन्दी पत्रिका